Vol III Issue IX March 2014 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Volume-3 | Issue-9 | March-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

हिंदी देश से विदेश तक : एक परिपेक्ष्य

घोरपडे पद्माकर पांडुरंग

पदयुत्तर पदवि अध्यापक (हिंदी) जवाहर नवोदय विदयालय, पोखरापुर
त. मोहोल, जिला – सोलापुर

सारांश :- *हिंदी का भारतीय (देशी) परिपेक्षीय सफर –1857 से संविधान तक*

जिस तरह बच्चों के मानसिक विकास के लिए मॉ का दूध आवश्यक है, उसी तरह देश के विकास के लिए हिंदी भाषा रूपी दूध आवश्यक है। – मा. गांधी.

आज महात्मा गांधी की यह बात उतनी ही सच है जितनी उस समय थी। आज हिंदी हमारे लिए उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि एक मॉ के लिए अपना बच्चा।

प्रस्तावना :-

भारत में हिंदी भाषा की अपेक्षा अहिंदी भाषी लोग अधिक है तो यह प्रश्न उपस्थित होना स्वाभाविक है कि पूरे भारतीय पटल पर क्या हिंदी को उचित सम्मान नहीं था?ऐसा नहीं है। आज ही नही बल्कि प्राचीन काल से हिंदी भाषा चलती आ रही है। समय समय पर उसने अपना रूप बदला है। कभी हिंदवी तो कभी हिंदूस्तानी, कभी रेख्ता तो कभी रेख्ती, कभी उर्दु तो कभी दक्खिणी आदि रूपों मे वह समय समय पर दस्तक देती आ रही है।

यह बडे आश्चर्य की बात है कि आजादी पूर्व हम पराधिन होकर भी दूसरों ने हमारी भाषा का उचित मान–सम्मान किया। यादव काल, मुस्लिम काल, राजपूत काल, ब्रिटिश काल इ. में हिंदी को उचित मान–सम्मान था। आजादी के बाद भी स्वयं के घर में जगह पाने के लिए संविधान का सहारा लेना पडा। फिर भी आज वह एक याचक की तरह खडी हैं। हिंदी के स्वरूप को लेकर, उसकी दशा–दिशा को लेकर , उसकी उपस्थिति को लेकर अब तक जितनी चर्चाऍं हुई शायद ही अन्य किसी भाषा को लेकर हुई हो।

स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने भी भारत में एक ही भाषा की अभिलाषा रखते हुए कहा था कि, ' भाई मेरी ऑखे तो उस दिन को देखने को तरस रही है, जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक, बस भारतीय एक भाषा समझने और बोलने लग जाए।'

1857 का आजादी का प्रथम रणसंग्राम असफल होने के बाद सन 1879 में संयुक्त प्रांत उत्तर प्रदेश की अदालतों में हिंदी आंदोलन अधिक तीव्र हुआ। सन 1900 तक आते आते यह राष्ट्रीय आंदोलन बना। सन 1905 में नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी द्वारा आयोजित सम्मेलन में लोकमान्य तिलक जी ने हिंदी को राष्ट्रभाषा स्वीकार करने पर जोर देते हुए कहा था कि – 'राष्ट्र संगठन के लिए आज एक ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे सर्वत्र समझा जा सके ।' दिसंबर 1917 में कलकत्ता में आयोजित अखिल भारतीय समाज सेवा सम्मेलन में मा. गांधी जी ने अपने अध्यक्षीय भाशण में कहा था कि – ' अगर हम देशी भाषाओं को फिर से अपना लें और हिंदी को उसके उपयुक्त स्थान राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करा दे तो देश की इससे बडी सेवा कोई हो ही नहीं सकती।'

2 सितंबर 1921 में मा. गांधी जी ने ही 'हिंदी नवजीवन' में लिखें लेख में लिखा था कि – 'अगर हमारे हाथ में तानाशाही सत्ता हो, तो मैं आज से ही विदेशी माध्यम के जरिए अपने लडकों और लडकियों की शिक्षा बंद कर दूँ और सारे शिक्षकों और प्रोफेसरों से यह माध्यम तुरंत बदलवा दूँ या उन्हें बर्खास्त कर दूँ।' सन 1925 में कानपूर अधिवेशन में यह प्रस्ताव स्वीकृत किया गया कि –'सभी कार्यों में प्रादेशिक कॉग्रेस कमेटियॉं प्रादेशिक भाषाओं या हिंदूस्तानी का प्रयोग करेगी तथा अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी का।'

अनंत शयनम आयंगर जी ने कहा था कि –'जब अंग्रेजी का अंत हो जाए तो फिर उसके स्थान पर समस्त भारत वर्ष के लिए एक सामान्य भाषा होनी भी आवश्यक है।'

नेताजी सुभाषचंद्र बोस जी ने भी हिंदी को अखिल भारतीय स्तर पर विशुध्द प्रेम, अपनापन निर्माण करनेवाली अपनी भाषा मानते हुए कहा था कि – 'देश की एकता के लिए एक भाषा होना जितना आवश्यक है उससे अधिक आवश्यक है देशभर के लोगों में देश के प्रति विशुध्द प्रेम तथा अपनापन होना। अगर आज हिंदी मान ली गई है तो वह अपनी सरलता, व्यापकता और क्षमता के कारण किसी प्रांत विशेष की भाषा नहीं बल्कि सारे देश की भाषा हो सकती है।'

प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चक्रवर्ती राजगोपालचारी जी ने हिंदी का समर्थन करते सन 1928 में तमिल जनता से अपील की कि – 'यदि

दक्षिण भारत को क्रियात्मक रूप से पूरे देश के साथ एक सूत्र में बॉधकर रहना है और दक्षिण भारतीयों को अधिल भारतीय मामलों में यदि तत्संबंधी निर्णयों के प्रभाव से अपने को दूर नहीं रखना है तो उन्हें हिंदी पढनी जरूरी हैं। ...भारत की सांस्कृतिक एकता के लिए भी एक सर्वमान्य भाषा को ग्रहन करना पडेगा। दक्षिण भारत को पूरे भारत वर्ष में सरकारी तथा व्यवसाईक नौकरियॉ पाने के लिए भी हिंदी बोलने और समझने का ज्ञान प्राप्त करना जरूरी होगा। हिंदी के ग्रहण का अर्थ मातृभाषा के महत्त्व को कम करना नहीं। हिंदी का महत्त्व केवल इस भारत की संभाव्य राष्ट्रभाषा बनने के संबंध से ही है। इसलिए दक्षिण के लोगो को हिंदी सीखनी चाहिए।

सन 1928 में स्वतंत्र भारत का संविधान बनाने हेतू पंडित मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में नियुक्त नेहरू रिपोर्ट में 'हिंदुस्तानी' को सर्वमान्य भाषा घोषित किया। मा. गांधी ने इसी हिंदुस्तानी की वकालत की थी।पं. नेहरू जी ने अखिल भारतीय भाषा की आवश्यकता पर बल देते हुए हिंदी की वकालत की। सन 1937 में प्रांतीय सरकार में पं. नेहरू ने कहा कि 'अखिल भारतीय भाषा होने के नाते हिंदुस्तानी को सरकारी भाषा के रूप में माना जाए।

गुलामी में जकडी जनता जब राष्ट्रभिमान और राष्ट्रीयता की ओर अग्रेसर हुई तो अपनी इस मिट्टी की भाषा को उन्होने अपनाया। आजादी के पूर्व भगतसिंग, तिलक, नेताजी, मा. गांधी आदि कई लोगों ने हिंदी का सहारा लिया। तिलक ने 'आजादी मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और वह मैं लेकर रहूँगा' , नेताजी ने 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा' , 'चलो दिल्ली', मा. गांधी ने 'चले जाव', वंदे मातरम' आदि नारे देकर हमें आजादी दिलाई।

प्रजातांत्रिय देश में अधिकत्तम जमसमुदाय द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा ही राष्ट्रभाषा का स्थान ग्रहण कर सकती है। इस कसौटी पर हिंदी ही खरी उतरती है। दक्षिण भारतीय ,उत्तर भारतीय और केंद्रीय भारत की मुख्य भाषाओं में एक सामान्य तत्व है जा बोलनेवाले को समझने में सहायता प्रदान करता है। यह आधार ही भारत के अधिकतर भाग की जनभाषा बनाने में सहायक है। केंद्र, राज्य और प्रांत सरकारों में व्यवहार की सर्वाधिक उपयुक्त भाषा हिंदी ही रहेगी। बृहत विशालकाय भारत में हम हिंदी द्वारा ही एक दूसरे से संपर्क बनाये रख सकेंगें। मा. गांधी ने कहा था कि 'हिंदी शिक्षित वर्गो के बीच समान माध्यम ही नहीं बल्कि जन–साधारण के हृदय तक पहुँचने का द्वार बन सकती है। इस दिशा में देश की कोई भाषा उसकी समानता नहीं कर सकती और अंग्रेजी तो कदापि नहीं।'

15 अगस्त 1947 को मा. गांधी ने वी.वी.सी. को संदेश दिया, कि 'दुनिया से कह दो कि गांधी अंग्रेजी नहीं जानता।' इस संदेश के पीछे स्वदेशी हिंदी की ही अभिलाषा थी। पुरूषोत्तमदास टंडन जी ने भी कहा था कि, 'राष्ट्रभाषा हिंदी द्वारा ही भारतीय संस्कृति की रक्षा हो सकती है।'

सन 1946 में संविधान सभा की पहली बैठक में डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी अध्यक्ष चुने गये। सभा ने कहा था कि – 'स्वतंत्र भारत की भाषा हिंदुस्तानी या अंग्रेजी होगी।' आजादी के पश्चात सन 1948 में उसे ही आगे बढाया गया। तत्पूर्वी जुलाई 1947 में बहुमत से 'हिंदुस्तानी' शब्द की जगह 'हिंदी' शब्द रखा गया। सन 1948 में स्टेयरींग कमेटी में यह निश्चित हुआ कि अंग्रेजी के साथ संविधान हिंदी भाषा में भी तैयार हो।

6,7 अगस्त 1949 को हिंदी साहित्य सम्मेलन के तत्वाधान में आयोजित राष्ट्रीय भाषा सम्मेलन मे नागरि लिपि में लिखित भाषा को सर्वसम्मति से स्वीकारा गया किंतु 16 अगस्त 1949 को संविधान सभा में भाषा के प्रश्न पर गरमागरम बहस हुई बाद में 22 अगस्त तक इस पर तूफान बहस चलती रही। इस बीच डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी ने एक फार्मूला रखा।

जब राष्ट्रभाषा राजभाषा समिति नियुक्त की गई तब इस समिति के अध्यक्ष दक्षिण भारतीय मुंशी अय्यंगर जी बने। समिति में कुल 28 सदस्य थे। अय्यंगर जी ने एक फार्मूला रखा जिसमें यह बात विदित थी कि ' विदेश के कामकाज के लिए हिंदी देश की सामान्य भाषा रहेगी।' इस पर 12, 13 सितंबर इन दो दिनों में तूफानी बहस, चर्चा चलती रही। इन चर्चाओं में एक एक करते–करते 400 से अधिक संविधान संशोधन किए गए। अतः 14 सितंबर 1949 को जब मतदान लिया गया तब हिंदी के पक्ष में 14 और विपक्ष में 14 मत मिले। अध्यक्ष जी ने अपना कीमती मत हिंदी के पक्ष में दिया और इस तरह 15–14 के बहुमत से मुंशी अय्यंगर जी के फार्मूले के आधार पर देवनागरी लिपि लिखित हिंदी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई। इस मौके पर संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी ने कहा कि – 'आज पहली बार हम अपने संविधान में एक भाषा स्वीकार कर रहे है। ..... राजभाषा हिंदी देश की एकता को कश्मीर से कन्याकुमारी तक अधिक सदृढ बना सकेगी। अंग्रेजी की जगह एक भारतीय भाषा को स्थापित करने से निश्चित ही हम एक दूसरे के करीब आ सकेंगें।'

संविधान में अनुच्छेद 343–351 तक भाषासंबंधी प्रावधान है। अनुच्छेद 343 में कहा गया कि देश की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी रहेगी। किंतु पुरूषोत्तमदास टंडन के प्रबल विरोध के बावजूद भी अनुच्छेद 343 खंड 2(1) में यह व्यवस्था की गई कि संविधान के प्रारंभ से 15 वर्षों तक संसद की कार्यवाही हिंदी और अंग्रेजी में होगी।..... इस बात की भी पूरी व्यवस्था की गई कि 15 वर्षों के बाद भी संसद कानून पारित कर इस अवधि को बढा सकती है। कहने का तात्पर्य यह है कि हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा तो दिया पर नौकरशाहों, पूँजिपतियों के स्वार्थों के चलते अंग्रेजी कों सहभाषा के रूप में रखा गया। परिणामतः आज तक अंग्रेजी अनाधिकारिक रूप में राजभाषा के पद पर स्थापित है। जहॉ दोनों भाषाओं में कागजात जारी करने का जो प्रावधान किया गया था वहॉ हिंदी निर्जीव अनुवाद मात्र रह गई। अर्थात आज वर्तमान में वास्तविक रूप में हिंदी में मूल कार्य और उनका अनुवाद अंग्रेजी में होना चाहिए था ,वहॉ अंग्रेजी मुख्य भाषा बनकर आज वर्तमान में मूल काम अंग्रेजी में और अनुवाद हिंदी में होने लगा हैं। भारतीय संविधान सभा की वाद–विवाद की सरकारी रिपोर्ट जो अंग्रेजी में है यदि इसको प्रादेशिक भाषाओं में सार्वजनिक करके वस्तुस्थिति जनता के सामने रखी होती तो कभी भी भारत देश में हिंदी विरोधी आंदोलन न होते। यह बडे दुर्भाग्य की बात है कि आज आजादी को 68 साल पूरे हुए फिर भी आज भी अनिश्चित काल के लिए इस अवधि को बढाते हुए अंग्रेजी को प्रतिष्ठापित किया गया।

युनिवर्सिटी ऑफ वेल्स के प्रोफेसर भाषा शास्त्री डेविट फ्रिस्टल ने वर्ल्ड वाईड वेब पर सर्वेक्षण कर अंग्रेजी के वैष्विक स्थिति पर कहा कि अंग्रेजी का प्रमाण 1997 में 80 % तो 2000 में 70 % और 2004 में घटकर 50 % हो गया है। यह सर्वेक्षण यह साबित करता है कि अंग्रेजी के मुकाबले हिंदी और अन्य कई भाषाऍं तेजी से विश्व पटल पर उभर कर सामने आ रही है। अब किसी के रूकाने, रोकने से वह नही रूकनेवाली; वह तो बहता पानी है।

पत्थर के जिगर वालों हिंदी में यह रूमानी है।
वह खुद राह बना लेगा, वह तो बहता पानी है।

वर्तमान में एक ओर हम अपनी ही राष्ट्रभाषा का उपहास कर रहे हैं वही दूसरी ओर विदेशी लोगों ने उसके वैश्विक व्यापक महत्ता को स्वीकारा है। भले ही हिंदी को लाख दबाने का प्रयास हो फिर भी वह बहुत तेजी से विश्व पटल पर बढ रही है। उसने अपनी योग्यता, नेतृत्व क्षमता सिद्ध कर दी है। मायक्रोसॉफ्ट के सर्वेसर्वा बिल गेट्स जब भारत दौरे पर मुंबई आए तब उन्होंने कहा कि – 'भारत को हिंदी सॉफ्टवेअर की आवश्यकता है और यह आवश्यकता पूरी करने के लिए मायक्रोसॉफ्ट तैयार है।' अब दो वर्षे के भीतर भारतीय एवं विश्व बाजार में हिंदी परिचालक प्रणाली में संगणक उपलब्ध होंगे। अर्थात हिंदी के महत्त्व को वैश्विक स्तर पर स्वीकारा गया है। भूमंडलीकरण के अस दौर में वाणिज्य व्यापार की परिधियॉ सीमाएँ लॉध रही है। उत्पादित वस्तुओं के अरबो के व्यापार–बाजार कारण हिंदी सीखनी अब समय की अनिवार्य आवश्यकता बन गई है।

2)विदेशों में हिंदी (हिंदी का वैश्विक परिपेक्ष्य):–

कोई भी भाषा बुरी नहीं होती बल्कि भाषाई मानसिकता घातक होती है। इस संकिर्ण मानसिकता के कारण ही भाषा अपनी जगह पर रहती है। उसकी अधोगति होती है। वह आगे बढ नहीं पाती। कोई भाषा जब दूसरी भाषा के शब्दों को अपने में समा लेती है तभी वह व्यापक बनती है। विदेशी भाषा के शब्द हिंदी में इस तरह घुल मिल गये है कि अब उन्हें अलग करना असंभव है। हिंदी ने अपने परिवेश में उन शब्दों को ढाल लिया है। वे शब्द हिंदी की अपनी एक विशेषता, अपनी एक पहचान बन गये है और वैश्विक पटल की ओर बढने की दिशा में यह महत्त्वपूर्ण, क्रातिकारी कदम हो सकता है। किंतु यह बडे दुःख की बात है कि जहॉ हिंदी वैश्विक शिखर की दिशा में आगे बढ रही है वही अपनी एक स्वदेशी भाषा के प्रति भारत में उदासी है। वही विदेशी लोग हिंदी को वैश्विक पटल पर अपना योगदान दे रहे है।

विदेशों में 154 देशों के वि. वि. में तथा अमरिका के 133 वि.वि. और महाविद्यालयों में हिंदी पढाई जाती हैं।

हिंदी की पढाई दो रूपों में होती हैं। 1) साहित्य संस्कृति की मान्यताओं, भावनात्मक धरोहर को अक्षुण्ण रखने हेतु विधा (कहानी उपन्यास काव्य नाटक निबंध यात्रा पत्र संस्मरण डायरी आदि) के रू‍प में जैसे साहित्य। 2) रोजी–रोटी हेतू व्यावसाईक, व्यावहारिक भाषा के रूप में आज हिंदी ज्ञान विज्ञान और साहित्य संस्कृति के आदान – प्रदान का माध्यम बनकर उभर रही है। अब वह दिन दूर नहीं जब विज्ञान, गणित, तकनीकि की पाठयपुस्तके हिंदी में उपलब्ध होगी। और विशिष्ट वर्ग का जो प्रभुत्व इस पर है वह न रहकर आम जन भी विज्ञान तमनीकी की पदवि, डिग्री हिंदी में लेगा, उसे पढेगा।

भारत के बाहर विदेशों में हिंदी तीन वर्गों में फैली है।

1) जीविका पार्जन हेतु विदेश गये लोग :–जीविका पार्जन हेतु विदेश गये लोगो का वर्ग जिन्हें ब्रिटीश आजादी के पूर्व के दिनों में गुलाम के रूप में ले गये । वे देश है – मॉरीशस, सूरीनाम, फीजी, ट्रिनीडाड, गयाना, द. अफ्रिका इन देशों मे ये लोग राजनीति प्रशासन सामाजिक जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग बन गये – नौवा विश्व हिंदी सम्मेलन 12–22 सितंबर 2012 को जोहन्सबर्ग (द.–अफ्रीका) में हुआ।

2) पडोसी देश :– नेपाल, भूतान, बांग्लादेश, श्रीलंका, पाकिस्तान,चीन आदि देशों में बिरादरी या रोजी रोटी के लिए कारोबार के लिए गये लोग वहॉ हिंदी को बढावा दे रहे है । चीन में प्रो. जिन डिंगटान ने रामचरितमानस का चीनी भाषा में अनुवाद किया । डॉ. गीनशेंवा ने वाल्मीकि रामायण का चीनी भाषा में अनुंवाद किया। चीन में वे हिंदी को बढावा देने का काम कर रहे है।

3)पाश्चात्य राष्ट्र:– ब्रिटेन, अमरिका, कनाडा, जर्मनी, फ्रान्स, स्वीडन, बेल्जिम में येकोस्लाविया, रूस, जपान इन देशों में भारतीय और हिंदी भाषीयों की संख्या दिन–ब–दिन बढती जा रही है। लंदन की दूसरी भाषा के रूप में हिंदी तेजी से उभर रही है। इन देशों में हिंदी को बढानेवाले लोग इस प्रकार है। वे लोग कोई भारतीय न होकर विदेशी हैं।

विदेशों में जिन जिन लोगों ने हिंदी को आगे बढाया उनमें फादर कामिल बुल्फे का नाम सर्वोपरि आता है। सबसे पहले उन्होंने अपना समस्त जीवन हिंदी के प्रति समर्पित कर तन मन धन से हिंदी का प्रसार–प्रचार किया।

1)इंग्लैड:– डॉ. रूपर्ट स्नेल जी ने 17 वे वर्षे में ही हिंदी सीखी। फेडीरिक साइमन ग्राउन ने तुलसी रामायण का अंग्रेजी में अनुवाद किया । फ्रेडरिक पिंकाट जी ने बाल दीपक के 4 खंड लिखे। इसके अलावा ग्रिलार्किस्ट (1282) रोनाल्ड स्टुअर्ट, मैक ग्रेगर ये वे लोग है जो हिंदी को इंग्लैड की भूमि पर आगे बढा रहे है।

2)चेकोस्लोवाकिया:– डॉ. स्मेकल भारत में राजदूत के रूप में सेवा देते आए है। उन्होंने प्रेमचंद के गोदान का चेक भाषा में अनुवाद किया।डॉ. आदोलेन ने भी चेकोस्लोवाकिया में हिंदी को बढावा देने का काम कर रहे है।

3)रूस:– रूस में डॉ. चेवर्गनी चेलीशेप हिंदी को बढावा देने का काम कर रहे है।

4)पोलैंड:– पोलैंड में मारिया ब्रस्की हिंदी को बढावा देने का काम कर रहे है।

5)कनाडा:– कनाडा में डॉ. कैथरिन जी हैन्सन हिंदी के प्रोफसर है। कनाडा में वे हिंदी को बढावा देने का काम कर रहे है।

6)जापानः— जापान में निवाको काईनुका सिनेमाद्वारा हिंदी शिक्षा दे रही है। उन्होंने भारत मे नाटक मंचन भी किया। प्रोफेसर क्यूमा दोई ने गोदान का जापानी भाषा में अनुवाद किया। डॉ. तोजियो मिनेकेनी जपान में हिंदी कहानीकार के रूप में चर्चित है। प्रो. तोशियो तबाका भी जापान में हिंदी पढाते है।

7)जर्मनीः— जर्मनी में लोहार लुत्से हिंदी को बढावा देने का काम कर रहे है।

8)इतालवीः— इतालवी में जोर्जी मिलाएनेति हिंदी को बढावा देने का काम कर रहे है।

9)हंगेरियाः— हंगेरिया में मारिया नैजेशी हिंदी को बढावा देने का काम कर रहे है।

10)अमेरिकाः— अमेरिका के न्यूयॉर्क में राम चौधरी, वाशिंग्टन में मधु महेश्वरी, गुलशन मधूर आदि हिंदी सेवा कर रहे है।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net